4 संधि एवं संधि-विच्छेद (Joining and Disjoining)

संधि

'संधि' शब्द का अर्थ होता है– 'मिलन' या 'मेल'। **भाषा में कुछ शब्दों को बोलते समय किसी शब्द में आनेवाली निकटतम ध्वनियाँ परस्पर मिलकर ज ब एक हो जाती हैं तो ध्वनियों के ऐसे मेल को 'संधि' कहते हैं।** उदाहरण के लिए, 'महा' तथा 'ईश' शब्द जब मिलाकर बोले जाते हैं तो 'महा' शब्द की अंतिम ध्वनि 'आ' तथा 'ईश' शब्द की पहली ध्वनि 'ई' आपस में मिलकर 'ए' बन जाते हैं। ध्वनियों का यह मेल 'संधि' का उदाहरण है। इस तरह, किसी शब्द की निकटतम ध्वनियों के बीच विकार सहित जो मेल होता है, उसे **'संधि'** कहते हैं।

यहाँ यह भी ध्यान रखना होगा कि दो ध्वनियों का मेल तो 'संधि' है ही, साथ ही संधि के परिणामस्वरूप ध्वनियों में जो परिवर्तन होता है, वह भी **'संधि'** के ही अंतर्गत आता है। संधि के कुछ और उदाहरण देखिए–

1. रमा + ईश = रमेश (आ + ई = ए)
2. देव + आलय = देवालय (अ + आ = आ)
3. सत् + मित्र = सन्मित्र (त् + म = न्म)
4. तमः + गुण = तमोगुण (अः + ग = ओ)

यहाँ पहले दो उदाहरणों में दो स्वरों का मेल हो रहा है, तीसरे उदाहरण में दो व्यंजनों का तथा चौथे उदाहरण में विसर्ग ध्वनि तथा व्यंजन ध्वनि का।

- इस तरह ध्यान रखने की बात यह है कि 'संधि' हमेशा किसी शब्द की **दो ध्वनियों के मध्य होती है**, दो शब्दों के बीच नहीं। यही गुण संधि को 'समास' से अलग करता है, क्योंकि समास प्रक्रिया दो शब्दों के मेल का परिणाम होती है।
- यह भी ध्यान रखिए कि 'संधि' तथा 'संयोग' भी एक नहीं होते। 'संयोग' में दो ध्वनियों का मेल तो हो सकता है, पर उस मेल के परिणामस्वरूप परिवर्तन नहीं होता, जबकि 'संधि' में परस्पर मिलनेवाली ध्वनियों में परिवर्तन होता है।
- 'संधि' के अंतर्गत होनेवाला **ध्वनि-परिवर्तन** तीन प्रकार का हो सकता है–

1. प्रथम ध्वनि में परिवर्तन–

उत् + मेष = उन्मेष [त् = न्], जगत् + नाथ = जगन्नाथ [त् = न्]
निः + चल = निश्चल [: = श्] यदि + अपि = यद्यपि [इ = य]

2. द्वितीय ध्वनि में परिवर्तन–

विद्या + अर्थी = विद्यार्थी [अ = आ], महा + इंद्र = महींद्र [इ = ई]
शिक्षा + अर्थी = शिक्षार्थी [अ = आ] वधू + उत्सव = वधूत्सव [उ = ऊ]

3. दोनों ध्वनियों में परिवर्तन–

(क) दोनों ध्वनियों का किसी तीसरी ध्वनि में परिवर्तन–

सूर्य + उदय = सूर्योदय [अ + उ = ओ], महा + इंद्र = महेंद्र [आ + इ = ए]

Scanned with CamScanner
Scanned with CamScanner

(ख) प्रथम तथा द्वितीय दोनों ध्वनियों में परिवर्तन–

उत् + शिष्ट = उच्छिष्ट [त् = च्, श = छ], तत् + शंकर = तच्छंकर [त् = च्, श् = छ]

संधि-विच्छेद

दो ध्वनियों के मेल को तो संधि कहा जाता है, पर इसके विपरीत यदि किसी शब्द की ध्वनियों को अलग-अलग करके संधि से पहलेवाली स्थिति में रख दिया जाए तो वह 'संधि-विच्छेद' कहलाता है। 'विच्छेद' शब्द का अर्थ ही है–'अलग-अलग करना'; जैसे–

नरेंद्र	=	नर	+	इंद्र	स्वागत	=	सु + आगत
दुष्कर	=	दुः	+	कर	सुरेश	=	सुर + ईश
संकल्प	=	सम्	+	कल्प	सूक्ति	=	सु + उक्ति

संधि : भेद-प्रभेद

संधि तीन प्रकार की होती है–

1. स्वर संधि
2. व्यंजन संधि
3. विसर्ग संधि

Scanned with CamScanner
Scanned with CamScanner

2. व्यंजन संधि

जब किसी भी व्यंजन ध्वनि के निकट कोई स्वर या व्यंजन आता है और उसके कारण व्यंजन में जो परिवर्तन होता है, उसे 'व्यंजन संधि' कहते हैं; जैसे–

जगत् + अंबा = जगदंबा (व्यंजन 'त्' के निकट 'अ' स्वर के आने से 'त्' का 'द्' में परिवर्तन)
सत् + मार्ग = सन्मार्ग (व्यंजन 'त्' के निकट 'म' व्यंजन के आने से 'त्' का 'न्' में परिवर्तन)
वि + सम = विषम ('स' व्यंजन के निकट 'इ' स्वर के आने से 'स्' का 'ष्' में परिवर्तन)

व्यंजन संधियों के कुछ प्रमुख नियम इस प्रकार हैं–

1. 'क्, च्, ट्, त्, प्' के बाद कोई भी सघोष ध्वनि (स्वर, वर्ग का तीसरा या चौथा व्यंजन - ग्/घ्, ज्/झ्, ड्/ढ्, द्/ध् तथा ब्/भ् अथवा य्, र्, ल्, व्, ह् व्यंजन) आती है तो निम्नलिखित परिवर्तन होता है–

क् = ग्, च् = ज्, ट् = ड्, त् = द्, प् = ब्

उदाहरण देखिए–

क्→ग्	वाक्	+	ईश	=	वागीश	दिक्	+	अंबर	=	दिगंबर
	दिक्	+	गज	=	दिग्गज	दिक्	+	अंत	=	दिगंत
च्→ज्	अच्	+	अंत	=	अजंत					
ट्→ड्	षट्	+	आनन	=	षडानन	षट्	+	दर्शन	=	षड्दर्शन
त्→द्	जगत्	+	ईश	=	जगदीश	तत्	+	भव	=	तद्भव
	भगवत्	+	गीता	=	भगवद्गीता	उत्	+	धार	=	उद्धार
प्→ब्	अप्	+	ज	=	अब्ज					

2. वर्ग के पहले या तीसरे व्यंजन के बाद यदि कोई नासिक्य व्यंजन प्रायः 'न्' या 'म्' आता है तो वर्ग का पहला/तीसरा व्यंजन अपने वर्ग के नासिक्य व्यंजन में बदल जाता है। हिंदी में इनमें से केवल क→ङ्, ट्→ण् तथा त्→न् के ही उदाहरण मिलते हैं; जैसे–

क् = ङ्, च् = ञ्, ट् = ण्, त् = न्, प् = म्

उदाहरण देखिए–

क्→ङ्	वाक्	+	मय	=	वाङ्मय	दिक्	+	नाद	=	दिङ्नाद
ट्→ण्	षट्	+	मास	=	षण्मास	षट्	+	मुख	=	षण्मुख
त्→न्	सत्	+	मार्ग	=	सन्मार्ग	जगत्	+	नाथ	=	जगन्नाथ

3. यदि 'त्/द्' व्यंजन के बाद 'च्, छ्' व्यंजन आएँ तो 'त्, द्' के स्थान पर 'च्'; 'ज्, झ्' व्यंजन आएँ तो इनके स्थान पर 'ज्'; 'ट्, ठ्' व्यंजन आएँ तो इनके स्थान पर 'ट्'; 'ड्, ढ्' व्यंजन आएँ तो इनके स्थान पर 'ड्' और 'ल्' व्यंजन आए तो 'ल्' में परिवर्तित हो जाता है; जैसे–

त् + च्→च्	उत्	+	चारण	=	उच्चारण	सत्	+	चरित्र	=	सच्चरित्र
	सत्	+	चित्	=	सच्चित्					
त् + छ्→च्	उत्	+	छिन्न	=	उच्छिन्न	जगत्	+	छाया	=	जगच्छाया
त् + ज्→ज्	सत्	+	जन	=	सज्जन	उत्	+	ज्वल	=	उज्ज्वल
	जगत्	+	जननी	=	जगज्जननी					
त् + ट्/ड्→ड्	तत्	+	टीका	=	तट्टीका	उत्	+	डयन	=	उड्डयन
त् + ल्→ल्	उत्	+	लास	=	उल्लास	उत्	+	लेख	=	उल्लेख

4. यदि 'त्/द्' के बाद 'श्' व्यंजन आता है तो 'त्/द्' का 'च्' हो जाता है तथा 'श्' व्यंजन 'छ्' में बदल जाता है; जैसे–

त् + श् = च्छ्	उत्	+	शिष्ट	=	उच्छिष्ट	हनुमत्	+	शास्त्री	=	हनुमच्छास्त्री
	उत्	+	श्वास	=	उच्छ्वास	तत्	+	शंकर	=	तच्छंकर

Scanned with CamScanner
Scanned with CamScanner

5. यदि 'त्/द्' व्यंजनों के बाद 'ह्' व्यंजन आता है तो 'त्/द्' का परिवर्तन 'द्' में तथा 'ह्' का परिवर्तन 'ध्' में हो जाता है; जैसे–

त्/द् + ह् = द्ध्

उत्	+	हार	=	उद्धार	पद्	+	हति	=	पद्धति
उत्	+	हरण	=	उद्धरण	उत्	+	हत	=	उद्धत

6. यदि किसी स्वर के बाद 'छ्' व्यंजन आता है तो 'छ्' से पहले 'च्' व्यंजन जुड़ जाता है। जैसे–

संधि	+	छेद	=	संधिच्छेद	स्व	+	छंद	=	स्वच्छंद
वि	+	छेद	=	विच्छेद	आ	+	छादन	=	आच्छादन

7. 'अनुस्वार' के बाद जिस वर्ग का व्यंजन आता है, अनुस्वार उसी व्यंजन के वर्ग का नासिक्य बन जाता है। संस्कृत में इसे पंचम वर्ण से लिखा जाता था, लेकिन हिंदी की मानक वर्तनी में केवल बिंदु से ही लिखे जाने की व्यवस्था है। चूँकि अनुस्वार शब्द के अंत में 'म्' व्यंजन के रूप में बोला जाता है, अत: उपसर्ग 'सम्' को 'सं' के रूप में भी लिख सकते हैं; जैसे–

अनुस्वार + क-वर्ग = ङ्	सं/सम् + गीत = सङ्गीत/संगीत,	सं/सम् + कल्प = सङ्कल्प/संकल्प
अनुस्वार + च-वर्ग = ञ्	सं/सम् + चय = सञ्चय/संचय	सं/सम् + जय = सञ्जय/संजय
अनुस्वार + ट-वर्ग = ण्	कं/कम् + टक = कण्टक/कंटक	पं/पम् + डित = पण्डित/पंडित
अनुस्वार + त-वर्ग = न्	सं/सम् + तोष = सन्तोष/संतोष	सं/सम् + देश = सन्देश/संदेश
अनुस्वार + प-वर्ग = म्	सं/सम् + पूर्ण = सम्पूर्ण/संपूर्ण	सं/सम् + भव = सम्भव/संभव

8. 'अनुस्वार' के 'बिंदु' अथवा 'म्' के बाद यदि 'य्', 'र्', 'ल्', 'व्', 'श्', 'स्', 'ह्' व्यंजन आते हैं तो भी अनुस्वार विंदु के रूप में ही लिखा जाएगा; जैसे–

सं/सम् + योग	= संयोग	सं/सम् + रचना	= संरचना
सं/सम् + लाप	= संलाप	सं/सम् + वाद	= संवाद
सं/सम् + सार	= संसार	सं/सम् + शय	= संशय

9. अनुस्वार के 'म्' व्यंजन के बाद यदि 'म्' व्यंजन ही आता है तो 'म्' व्यंजन का द्वित्व हो जाता है, अनुस्वार नहीं रहता; जैसे–

सम् + मति	= सम्मति	सम् + मान	= सम्मान
सम् + मोहन	= सम्मोहन	सम् + मिश्रण	= सम्मिश्रण

10. यदि 'स्' व्यंजन के पहले 'अ/आ' के अलावा कोई अन्य स्वर आता है तो 'स्' का 'ष्' हो जाता है; जैसे–

वि + सम	= विषम	परि + सद	= परिषद
सु + समा	= सुषमा	अभि + सेक	= अभिषेक

11. यदि 'ऋ', 'र्' तथा 'ष' के बाद 'न्' व्यंजन आता है तो वह 'ण्' में बदल जाता है। भले ही बीच में क-वर्ग, प-वर्ग का कोई व्यंजन, अनुस्वार या 'य्, व्, ह्' में से कोई भी व्यंजन हो; जैसे–

राम	+	अयन	= (रामायन)	= रामायण	परि	+	नाम	= (परिनाम)	= परिणाम
ऋ	+	न	= (ऋन)	= ऋण	कृष्	+	न	= (कृष्न)	= कृष्ण
विष्	+	नु	= (विष्नु)	= विष्णु	पूर्	+	न	= (पूर्न)	= पूर्ण

3. विसर्ग संधि

विसर्ग के बाद स्वर या व्यंजन ध्वनि आने से विसर्ग में जो परिवर्तन होता है, उसे विसर्ग संधि कहते हैं; जैसे–

मन: + बल = मनोबल, नम: + कार = नमस्कार, तप: + बल = तपोबल

Scanned with CamScanner
Scanned with CamScanner

विसर्ग संधि के कुछ नियम इस प्रकार हैं–

1. यदि विसर्ग से पहले 'अ' स्वर हो और बाद में 'अ' या किसी वर्ग का तीसरा, चौथा, पाँचवाँ व्यंजन हो अथवा 'य्', 'र्', 'ल्', 'व्', 'ह्' में से कोई भी व्यंजन हो तो विसर्ग का परिवर्तन **'ओ'** में हो जाता है; जैसे–

तपः	+ बल	= तपोबल	मनः	+ हर	= मनोहर
मनः	+ योग	= मनोयोग	अधः	+ पतन	= अधोपतन
सरः	+ वर	= सरोवर	वयः	+ वृद्ध	= वयोवृद्ध
तपः	+ भूमि	= तपोभूमि	अधः	+ गति	= अधोगति
मनः	+ अनुकूल	= मनोनुकूल	मनः	+ विनोद	= मनोविनोद

अपवाद : पुनः + मिलन = पुनर्मिलन

2. यदि विसर्ग से पहले 'अ/आ' के अलावा कोई भी स्वर हो तथा बाद में वर्ग का तीसरा, चौथा, पाँचवाँ व्यंजन हो अथवा 'य्', 'र्', 'ल्', 'व्', 'ह्' में से कोई भी व्यंजन हो अथवा कोई भी स्वर हो तो विसर्ग का परिवर्तन 'र्' में हो जाता है; जैसे–

निः	+ धन	= निर्धन	निः	+ मूल	= निर्मूल
दुः	+ उपयोग	= दुरुपयोग	दुः	+ वासना	= दुर्वासना
दुः	+ गुण	= दुर्गुण	निः	+ भय	= निर्भय
दुः	+ लभ	= दुर्लभ	पुनः	+ जन्म	= पुनर्जन्म
दुः	+ दिन	= दुर्दिन	निः	+ आशा	= निराशा
आशीः	+ वाद	= आशीर्वाद	बहिः	+ मुख	= बहिर्मुख
निः	+ उत्तर	= निरुत्तर	दुः	+ आशा	= दुराशा
निः	+ यात	= निर्यात	पुनः	+ जन्म	= पुनर्जन्म

3. यदि विसर्ग के बाद 'च्/छ्' व्यंजन हो तो विसर्ग का **'श्'**; 'ट्/ठ्' व्यंजन हो तो **'ष्'** तथा 'त्/थ्' व्यंजन हो तो **'स्'** हो जाता है; जैसे–

निः	+ चल	= निश्चल	निः	+ छल	= निश्छल
धनुः	+ टंकार	= धनुष्टंकार	निः	+ ठुर	= निष्ठुर
मनः	+ ताप	= मनस्ताप	नमः	+ ते	= नमस्ते
निः	+ चय	= निश्चय	निः	+ तार	= निस्तार
दुः	+ तर	= दुस्तर	निः	+ चिंत	= निश्चिंत

4. यदि विसर्ग के बाद 'स्/श्/ष्' व्यंजन हो तो विसर्ग या तो उसी रूप में बना रहता है या अपने आगेवाले व्यंजन में बदल जाता है; जैसे–

निः	+ संदेह	= निःसंदेह/निस्संदेह	दुः	+ शासन	= दुःशासन/दुश्शासन
दुः	+ साहस	= दुस्साहस	निः	+ संग	= निस्संग

5. यदि विसर्ग के बाद 'र्' व्यंजन आता है तो विसर्ग का लोप हो जाता है और विसर्ग के पहले आनेवाला 'ह्रस्व' स्वर **'दीर्घ'** हो जाता है; जैसे–

निः	+ रोग	= नीरोग	निः	+ रस	= नीरस
निः	+ रज	= नीरज	निः	+ रव	= नीरव

6. विसर्ग के बाद यदि 'क्/ख्' अथवा 'प्/फ्' व्यंजन आएँ तो विसर्ग में कोई परिवर्तन नहीं होता; जैसे–

रजः	+ कण	= रजःकण	अंतः	+ करण	= अंतःकरण
प्रातः	+ काल	= प्रातःकाल	पयः	+ पान	= पयःपान
अपवादः नमः	+ कार	= नमस्कार	भाः	+ कर	= भास्कर
पुरः	+ कार	= पुरस्कार			

Scanned with CamScanner

Scanned with CamScanner

7. विसर्ग के पहले यदि 'इ/उ' स्वर आते हैं तो विसर्ग का 'ष्' हो जाता है; जैसे–

निः	+	फल	= निष्फल	निः	+	कपट	= निष्कपट
निः	+	पाप	= निष्पाप	दुः	+	कर	= दुष्कर
निः	+	कलंक	= निष्कलंक	दुः	+	कर्म	= दुष्कर्म

8. यदि विसर्ग के पहले 'अ/आ' स्वर हो और बाद में 'अ/अ' से भिन्न कोई भी स्वर आए तो विसर्ग का लोप हो जाता है; जैसे– अतः + एव = अतएव

Scanned with CamScanner
Scanned with CamScanner

5. निम्नलिखित शब्दों की संधि कीजिए।

1. शिव + आलय = ...
2. नारी + इच्छा = ...
3. भू + उन्नति = ...
4. महा + ईश्वर = ...
5. राज + ऋषि = ...
6. गंगा + ऊर्मि = ...
7. परम + ऐश्वर्य = ...
8. प्रति + उपकार = ...
9. सु + अच्छ = ...
10. अनु + इति = ...
11. मातृ + आज्ञा = ...
12. पो + इत्र = ...
13. भगवत् + गीता = ...
14. षट् + आनन = ...
15. सत् + जन = ...
16. उत् + लेख = ...
17. अनु + छेद = ...
18. पद् + हति = ...
19. सम् + मान = ...
20. राम + अयन = ...
21. पुनः + जन्म = ...
22. मनः + विनोद = ...
23. दुः + कर्म = ...
24. भाः + कर = ...
25. सीमा + अंकित = ...
26. मुनि + इंद्र = ...
27. कपि + ईश = ...
28. सत्य + आग्रह = ...
29. नित्य + आनंद = ...
30. नारी + ईश्वर = ...
31. लघु + ऊर्मि = ...
32. देवी + इच्छा = ...
33. भू + ऊर्ध्व = ...
34. उमा + ईश = ...
35. नग + इंद्र = ...
36. हित + उपदेश = ...
37. सर्व + उत्तम = ...
38. जल + औध = ...
39. परम + औदार्य = ...
40. नदी + ऐश्वर्य = ...
41. देवी + आगम = ...
42. अनु + एषण = ...
43. भो + अन = ...
44. वाक् + ईश = ...
45. जगत् + अंबा = ...
46. सत् + गति = ...
47. लक्ष्मी + छाया = ...
48. सम् + कीर्ण = ...
49. शरत् + चंद्र = ...
50. विष् + नु = ...
51. हरिः + चंद्र = ...
52. अंतः + गत = ...
53. निः + मल = ...
54. दुः + साहस = ...
55. निः + छल = ...
56. सम् + ध्या = ...
57. सम् + मति = ...
58. दुः + कर = ...
59. मनः + बल = ...
60. पुरः + कार = ...
61. निः + रोग = ...
62. अधः + पतन = ...
63. अतः + एव = ...
64. वाक् + मय = ...
65. उत् + नति = ...
66. अति + आचार = ...
67. अभि + उदय = ...
68. ब्रह्म + ऋषि = ...
69. समुद्र + ऊर्मि = ...
70. लघु + उत्तर = ...

6. संधि-विच्छेद कीजिए।

1. उद्धार = ...+.....
2. पावक = ...+.....
3. पित्रनुमति = ...+.....
4. अन्वय = ...+.....

Scanned with CamScanner
Scanned with CamScanner

5.	अध्येता	=	...............+...............	6.	व्यूह	=	...............+...............
7.	संभव	=	...............+...............	8.	विच्छेद	=	...............+...............
9.	हनुमन्नाशी	=	...............+...............	10.	दुर्वासना	=	...............+...............
11.	निर्भेद	=	...............+...............	12.	अंत:करण	=	...............+...............
13.	पीतांबर	=	...............+...............	14.	महात्मा	=	...............+...............
15.	वार्तालाप	=	...............+...............	16.	भावार्थ	=	...............+...............
17.	युगादि	=	...............+...............	18.	राजर्षि	=	...............+...............
19.	गणेश	=	...............+...............	20.	महींद्र	=	...............+...............
21.	गिरीश	=	...............+...............	22.	रेखांश	=	...............+...............
23.	अधोपतन	=	...............+...............	24.	दुर्जन	=	...............+...............
25.	सद्गुण	=	...............+...............	26.	प्रात:काल	=	...............+...............
27.	उपर्युक्त	=	...............+...............	28.	पवित्र	=	...............+...............
29.	नयन	=	...............+...............	30.	प्रमाण	=	...............+...............
31.	अनुच्छेद	=	...............+...............	32.	उच्चारण	=	...............+...............
33.	पित्राज्ञा	=	...............+...............	34.	संगति	=	...............+...............
35.	निष्कलंक	=	...............+...............	36.	देवर्षि	=	...............+...............
37.	महौषध	=	...............+...............	38.	प्रतीक्षा	=	...............+...............
39.	सेवार्थ	=	...............+...............	40.	लंकेश	=	...............+...............
41.	रजनीश	=	...............+...............	42.	अत्यधिक	=	...............+...............
43.	सूक्ति	=	...............+...............	44.	दंतौष्ठ	=	...............+...............
45.	तथैव	=	...............+...............	46.	ज्ञानेंद्र	=	...............+...............
47.	तपोबल	=	...............+...............	48.	स्वच्छ	=	...............+...............
49.	सन्मार्ग	=	...............+...............	50.	उल्लेख	=	...............+...............
51.	पावक	=	...............+...............	52.	शयन	=	...............+...............
53.	सर्वोत्तम	=	...............+...............	54.	नवागत	=	...............+...............
55.	सूर्योदय	=	...............+...............	56.	अन्वेषण	=	...............+...............
57.	एकैक	=	...............+...............	58.	धर्मांध	=	...............+...............
59.	कपीश	=	...............+...............	60.	रेखांकित	=	...............+...............

7. **मिलान कीजिए।**

वर्ग-क	वर्ग-ख
1. दीर्घ संधि	(*i*) परम + ईश्वर
2. व्यंजन संधि	(*ii*) सु + आगत
3. वृद्धि संधि	(*iii*) नौ + इक
4. गुण संधि	(*iv*) दु: + कर
5. यण संधि	(*v*) आयत + आकार
6. अयादि संधि	(*vi*) एक + एक
7. विसर्ग संधि	(*vii*) जगत् + नाथ

Scanned with CamScanner
Scanned with CamScanner